ICOSD

Organised by

In Association With

Research Foundation of India
रिसर्च फाउंडेशन ऑफ इंडिया

Sponsored By

WFST

CERTIFICATE
OF APPRECIATION

13th International Conference

On (www.icosd.co.in)

"Sustainable Development Through Social, Science, Management, Smart Education, Agriculture Technologies & Advanced Engineering Applications in Global Environment"

Venue : Om Kothari Institute of Management & Research, Kota, Raj., India

It is Certified that Prof./Dr./Mr./Ms./Mrs. डॉ. पुष्पा मिश्रा (सहायक आचार्य)
of समाज कार्य विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)
Participated in The 13th International Conference on " Sustainable Development Through Social, Science, Management, Smart Education, Agriculture Technologies & Advanced Engineering Applications in Global Environment" held at Om Kothari Institute of Management & Research, Kota, India on 23-24 February 2019 as Session Chairperson / Co-chairperson/ Mentor/ Resource Person / Invited Guest / Invited Speaker / Delegate and Presented / " सतत विकास एवं पर्यावरण संरक्षण "
in Technical Session..................

ICOSD/2019/..454..

Dr. Sourabh Jain Chairman Research Foundation of India	Prof. (Mr.) Nayan Gandhi OKIMR Kota Organizing Secretary-ICOSD-2019	Prof. (Dr.) Ashok Kumar Gupta South Asia Chapter Head Research Foundation of India	Prof.(Dr.) Amit Singh Rathore Director, OKGEI Kota Convenor-ICOSD-2019

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATION IN ENGINEERING RESEARCH & MANAGEMENT ISSN: 2348-4918
PEER REVIEWED AND REFEREED JOURNAL IMPACT FACTOR: 3.693 (INTERNATIONAL JOURNAL)
13TH CONFERENCE (ICOSD) 2019

सतत् विकास एवं पर्यावरण संरक्षण

डॉ. पुष्पा मिश्रा
सहायक आचार्य, समाज कार्य विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

सतत् विकास सामाजिक आर्थिक विकास की वह प्रक्रिया है जिसमें पृथ्वी की क्षमताओं के आधार पर विकास की बात की जाती है। प्राकृतिक संसाधनों का समाप्ति की ओर बढ़ना मानव जीवन के लिए खतरा बन गया है। यह अवधारणा 1960 के दशक में प्रचलन में आई जब लोग औद्योगीकरण के पर्यावरण पर हानिकारक प्रभावों से परिचित हुए। सतत् विकास कोयला, तेलन तथा जल जैसे संसाधनों के दोहन के नियंत्रण के लिए तकनीकों, औद्योगिक प्रक्रियाओं तथा विकास की यथोचित नीतियों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है। 1992 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने ब्राजील की राजधानी रियो डी जेनिरो में पृथ्वी शिखर सम्मेलन का आयोजन किया। यह पर्यावरण संरक्षण पर अब तक का सबसे बड़ा सम्मेलन था जिसमें 182 देशों के 20,000 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। 1992 में सतत् विकास के कार्यक्रमों को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास आयोग का गठन किया गया।

सतत् विकास से तात्पर्य प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग इस प्रकार से हो जिसमें पर्यावरणीय असंतुलन न हो तथा प्रकृति का दोहन क्षमता से अधिक न हो। यह अवधारणा विकास की नीतियों को पर्यावरण के अनुरूप बनाने पर बल देती है। वैण्टलैण्ड आयोग की एक रिपोर्ट आवर कॉमन फ्यूचर (1987) के अनुसार, जो भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति से बिना समझौता किये बिना वर्तमान की आवश्यकताएं पूरी करता है। अर्थात् विकास हमारी आज की जरूरत को पूरा करे, साथ ही आने वाली पीढ़ियों की जरूरतों की भी अनदेखी ना करे। सतत् विकास मनुष्य को पर्यावरण के साथ अन्तर्सम्बन्ध बनाने पर बल देता है।पृथ्वी की सहनशक्ति, प्रदूषण, उद्योग, वनों के कटाव, अधिक जनसंख्या तथा शहरीकरण से डगमगा रही है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सभी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृतियों में प्रकृति एवं पर्यावरण की रक्षा के विचार मिलते हैं। प्रकृति एवं पर्यावरण इन तत्त्वों पृथ्वी, जल, आकाश, वनस्पति एवं जीवों को ईश्वर के समतुल्य माना गया है। औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् आर्थिक प्रगति के उद्देश्य से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तेजी से होने लगा। नगरीकरण, परीवहन क्रान्ति, मशीनीकरण एवं औद्योगीकरण की प्रक्रियाओं ने पर्यावरण एवं मानव के बीच संतुलन जैसी समस्याएं पैदा होने लगी। जल का स्तर कम होने लगा। वायु प्रदूषण से विभिन्न प्रकार की बीमारियों में वृद्धि हुई। ओजोन परत में छिद्र मानव अस्तित्व के लिए खतरा बन गया। मौसम का चक्र असंतुलित हो गया।

सतत् विकास के मूल तत्त्व

सतत् विकास की प्रक्रिया में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, प्रशासनिक एवं राजनीतिक सभी पक्ष शामिल होते हैं। पर्यावरण की दृष्टि से सतत् विकास पारिस्थितिकीय संतुलन स्थापित करने के लिए नितान्त आवश्यक है।

समन्वित एवं समग्र दृष्टिकोण के अनुसार सतत् विकास के मूल तत्त्व निम्नलिखित हैं–

1. जैविकीय, पारिस्थितिकीय एवं सांस्कृतिक विविधता और प्राकृतिक धरोहर का संरक्षण।
2. प्राकृतिक संसाधनों का संयमित दोहन की दूरगामी नीति।
3. संसाधनों के उपयोग में सामाजिक न्याय के सिद्धान्तों की पालना।
4. मानवीय कल्याण का गुणात्मक विकास।
5. समावेशी वृद्धि के साथ–साथ समावेशी नीतियों का विकास।
6. पर्यावरणीय नीतियों एवं प्राकृतिक संसाधनों के मूल्यों का पुनःनिर्धारण।
7. पर्यावरणीय मुद्दों पर स्थानीय या देशज सोच के स्थान पर वैश्विक सोच का विकास।
8. वास्तविक एवं सक्षम सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करना।

9. संसाधनों के अतिशय दोहन एवं प्रौद्योगीकीय ज्ञान के दुरूपयोग से सुरक्षा सुनिश्चित करना।
10. प्रदूषित अपशिष्टों का सुरक्षित निस्तारण एवं खाद्य–सुरक्षा।
11. कृषि को पारिस्थितिकी के अनुकूल विकसित करना।

सतत् विकास के संकेतक

सतत् विकास एक बहुआयामी, बहु–वैषयिक एवं बहुलवादी प्रक्रिया है। इसके मापन हेतु विभिन्न संकेतकों को अपनाया जाता है। इसके मापन हेतु सूचकांक के निर्धारण हेतु जैविकीय, भौगोलिक, प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, पारिस्थितिकीय, प्रशासनिक,औद्योगिक, राजनीतिक, दार्शनिक एवं वैज्ञानिक पक्षों को मिलाकर एकीकृत दृष्टिकोण बनाया जाना चाहिए।

वर्तमान में वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के साथ–साथ कृषि, खनन, उद्योग, परिवहन, भूमि प्रबन्धन एवं संचार के क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। इस प्रगति ने पर्यावरण को निरन्तर हानि पहुंचाई है। फलस्वरूप सतत् विकास की प्रक्रिया बाधित हुई है। जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न खाद्यान्न की कमी को दूर करने के लिए हमने रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का उपयोग किया है। विशेषरूप से विकासशील देशों में हरित क्रांति के फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण एवं पारिस्थितिकीय असंतुलन में भारी वृद्धि हुई है। इस दुष्प्रभाव को कम करने के लिए वर्तमान में जैविक कृषि पर जोर दिया जाने लगा है। जैविक कृषि में उर्वरकों एवं कीटनाशकों के रूप में जैविक पदार्थों का ही उपयोग किया जाता है। सतत् विकास के लिए जैविक कृषि को अपनाने की आवश्यकता है।

विश्व में ऊर्जा के उपयोग में निरन्तर वृद्धि होने से एक तरफ ऊर्जा का संकट पैदा होता जा रहा है तो दूसरी तरफ पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। ऊर्जा के परम्परागत स्रोतों के अनियंत्रित दोहन से ये समाप्त हो रहे हैं। अतः ऊर्जा के गैर–परम्परागत स्रोतों तथा पुनर्नवीनीकृत स्रोतों के प्रयोग को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा एवं भू–तापीय ऊर्जा पर्यावरण की दृष्टि से ऊर्जा के उत्तम स्रोत हैं। सतत् विकास के लिए इन्हें अपनाने की आवश्यकता है।

वनों का कटाव एवं मरूस्थलीकरण की समस्याएं आज पर्यावरण एवं विकास के लिए खतरा बनी हुई है। वनों के विनाश के परिणामस्वरूप पर्यावरण पर विपरित प्रभाव पड़ता है जो अन्ततः जलवायु परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है। इस प्रकार भूमि के अतिशय शोषण–दोहन एवं वनों के विनाश के कारण मरूस्थल विकसित होता है। मरूस्थलीकरण को रोकने के लिए उचित भू उपयोग, मृदा संरक्षण, प्राकृतिक वनस्पति का विकास, जनसांख्यिकीय संतुलन का स्थिरीकरण जैसे उपाय करने आवश्यक हैं।

जिस तरह से विश्व की जनसंख्या बढ़ रही है उससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि अब यह 8 अरब होने के कगार पर है और जिस तरह से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया जा रहा है। उसका दुष्परिणाम यह होगा कि आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी पर संसाधन उपलब्ध नहीं होंगे। हमारे पूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा है–"हमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से पानी, ऊर्जा, निवास, कचरा प्रबन्धन एवं पर्यावरण के क्षेत्र में पृथ्वी द्वारा झेली जाने वाली समस्याओं को दूर करने के लिए कार्य करना होगा।" रिजर्व बैंक गवर्नर श्री रघुराम राजन का कहना है "हमें यह निश्चित करके चलना चाहिए कि पूरे विश्व में वृद्धि के वास्तविक एवं सतत् स्रोत हों।

इनवायरनमेण्ट डाटा सर्विसेज की रिपोर्ट के अनुसार लोगों एवं राष्ट्र की सुरक्षा, भोजन, ऊर्जा, पानी एवं जलवायु, इन चार स्तम्भों पर निर्भर है। ये चारों एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्ध रखते हैं और ये सभी खतरे की सीमा को पार करने की कगार पर हैं। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण में निरन्तर वृद्धि हो रही है। यदि इन्हें नियंत्रित नहीं किया गया तो परिणाम अत्यन्त भयंकर होंगे।

सतत् विकास के लिए सामुदायिक प्रयास

पर्यावरण संरक्षण एवं सतत् विकास के सन्दर्भ में सामुदायिक समाज की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। पर्यावरण तथा विकास से सम्बन्धित मुद्दों पर सामुदायिक समाज को

निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करने की बात सर्वप्रथम 1992 में रियो शिखर वार्ता में की गयी। भारत के लगभग 300 प्रतिनिधियों ने विश्व विकास बैंक के अध्यक्ष को प्रपत्र प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त जैव विविधता के संरक्षण के नाम पर मध्यप्रदेश के कई कबीलों को वनों से वंचित करने की गति के प्रति प्रतिरोध किया गया। सामुदायिक स्तर पर किये गये प्रयास से सतत् विकास को बढावा मिलेगा। वनों की रक्षा, उपभोगवादी विचारधारा से विमुख होना, प्राकृतिक संसाधनों की संरक्षा, सुरक्षा का दायित्व सामुदायिक समाज के ऊपर है। औद्योगिकीकरण और नगरीकरण ने तो उपभोग को बढ़ावा ही दिया है। भारत में दशौली ग्राम स्वराज संघ द्वारा चिपको आंदोलन, टिहरी बांध विरोधी संघर्ष समिति द्वारा टिहरी बचाओ आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन, तरूण भारत संघ द्वारा जल संरक्षण आंदोलन सामुदायिक स्तर पर किये गये प्रयासों के माध्यम से विकास को पर्यावरण संरक्षण आधारित बनाने की सफल मुहिम का उदाहरण है।

महात्मा गांधी ने सतत् विकास के लिए बढ़ती इच्छाओं और आवश्यकताओं के अधीन आधुनिक सभ्यता के खतरे की ओर ध्यान आकर्षित किया था। अपनी पुस्तक "द हिन्द स्वराज" में उन्होंने निरन्तर चल रही खोजों के कारण हो रहे उत्पादों को मानवता के लिए खतरा बताया था।

सुझाव

सतत् विकास वर्तमान आधुनिक युग की आवश्यकता है क्योंकि मानव जाति का वर्तमान और भविष्य दोनों इस पर निर्भर करते हैं। हरित क्रान्ति, औद्योगिक क्रान्ति और सूचना क्रान्ति के पश्चात् अब विनाश रहित विकास के क्रान्ति की आवश्यकता है। संसाधनों के पुनःचक्रण एवं संरक्षण पर जोर दिया जाय।

स्वच्छ एवं सीमित ऊर्जा से संचालित प्रौद्योगिकी पर्यावरण सुरक्षा एवं विकास हेतु आवश्यक है। सतत् विकास के लिए सामान्य रूप से निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं–

1. प्रत्येक क्षेत्र में पर्यावरणीय मुद्दों पर शोधकार्य किये जायें।
2. वन संरक्षण का सघन कार्यक्रम निरन्तर चले।
3. पारिस्थितिकीय संतुलन के प्रयास।
4. हरित जीवन पद्धति।
5. स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्द्धक कार्य दशाओं की स्थापना।
6. गैर–परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के प्रयोग को प्रोत्साहन।
7. पर्यावरण तकनीक एवं प्रौद्योगिकी का सरल एवं सहज हस्तान्तरण।
8. जैविक उर्वरकों एवं जैविक कृषि के प्रयोग को बढ़ावा।
9. पर्यावरण शिक्षा को स्कूल, महाविद्यालय पाठ्यक्रम का अहम् अंग बनाया जाये।
10. पर्यावरण प्रबन्धन एवं पारिस्थितिकीय अंकेक्षण को अनिवार्य किया जाये।
11. पर्यावरणीय मुद्दों का समाजीकरण एवं मानवीयकरण करने की आवश्यकता है।
12. संयुक्त राष्ट्र संघ के सतत् विकास कार्यक्रम एजेण्डा–21 का सभी देशों में क्रियान्वयन किया जाना चाहिए।
13. उत्पादों का मानकीकरण एवं इको मार्क लेना अनिवार्य किया जाये।
14. जनसंख्या नियंत्रण एवं पर्यावरण संरक्षण नीतियों की आवश्यकता।
15. ऊर्जा संरक्षण एवं बचत की पहल।

भारत के सर्वांगीण स्तम्भ सजगता, सक्रियता एवं दृढ़ इच्छा शक्ति से अपना काम करें। विधायिका की राजनीतिक इच्छा शक्ति एवं जवाबदेही, कार्यपालिका के त्वरित एवं साहसिक निर्णय, न्यायपालिका की प्रहरी एवं संतुलित सक्रियता की भूमिका, प्रेस की सजग–जागरूक दृष्टि एवं स्वैच्छिक और गैर–सरकारी संगठन शासन को जनता की अंतिम कड़ी तक पहुंचाने का काम करें तो हमारे देश को हम विश्व की अग्रिम पंक्ति में पाएंगे। सतत् विकास के माध्यम से ही हम विश्व पटल पर स्थान बना सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आहुजा, राम, सामाजिक समस्याएं, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2000
2. सक्सेना, हरिमोहन, पर्यावरण प्रदूषण एवं संधृत विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2014
3. मायरा, अरूण, सतत् प्रगति की रणनीतियां, योजना, फरवरी, 2014
4. नरूका, राजेन्द्र सिंह, समय की पुकार, ओरण संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा संस्थान, सिरोही (राजस्थान), 2012

5. परीक्षा मंथन, भाग–4, पर्यावरण, जनसंचार एवं अनार्थिक क्षेत्र
6. समसामयिकी, क्रॉनिकल, पारिस्थितिकी पर्यावरण समग्र, मार्च, 2014
7. शर्मा, जी.एल., सामाजिक मुद्दे (2015), रावत पब्लिकेशन